लोबिया

वानस्पतिक नामः *विग्ना अन्गुइकुलाटा*

कुलः लेग्यूमिनेसी

लोबिया तेज गति से बढ़ने वाली दलहनी चारा फसल है। अधिक पौष्टिकता एवं पाचकता से भरपूर होने के कारण इसे घासों के साथ मिलाकर बोने से उनकी पोषकता बढ़ जाती है। यह ऐसी फसल है जो मिट्टी को ढंक कर रखती है जिससे मृदा का अपरदन रुकता है और साथ ही खेत में खरपतवारों को बढ़ने का मौका नहीं मिलता है। इसको खरीफ तथा जायद मौसम में उगाया जा सकता है।

पोषकता

इसके हरे चारे में शुष्क भार आधार पर 20–24 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन, 43–49 प्रतिशत उदासीन अपमार्जक रेशा (एन.डी.एफ.), 34–77 प्रतिशत एसिड डिटर्जेन्ट रेशा तथा 23–25 प्रतिशत सेल्यूलोज तथा 5–6 प्रतिशत हेमिसेलुलोस होता है।

मृदा एवं उसकी तैयारीः

लोबिया सामान्यतः हल्की एवं अच्छे जल निकास वाली भूमियों में अच्छी उपज देती है। खेत तैयार करने के लिये हैरो या कल्टीवेटर से दो जुताईयां करने से अंकुरण जल्दी और अच्छा होता है।

उन्नत प्रजातियाँ

प्रजातियाँ	उपयुक्त क्षेत्र	हरा चारा (टन/हे)
कोहिनूर	उत्तर भारत	30–40
श्वेता	महाराष्ट्र	35–40
बुन्देल लोबिया–2	सम्पूर्ण भारत	30–40
बुन्देल लोबिया–3	सम्पूर्ण भारत	30–40
एफ.सी.–8	तमिलनाडु	30–45
जी.एफ.सी.–1,2,3,4 एवं चरोडी	गुजरात	25–35
यू.पी.सी.–607, 618, 622	उत्तर पश्चिम, उत्तर पूर्व, पहाड़ी क्षेत्र	35–45
यू.पी.सी.–5287	उत्तर भारत	35–40
आई.एफ.सी.–8503, ई.सी.–4216	उत्तर भारत, पश्चिम और मध्य भारत	30–40
यू.पी.सी.–5286, 618	सम्पूर्ण भारत	30–45

बुवाई का समयः

गर्मियों की फसल के लिये बुवाई का उपयुक्त समय मार्च होता है। खरीफ मौसम में लोबिया की बुवाई वर्षा होने के पश्चात् जुलाई माह में करनी चाहिए।

बीज दर एवं दूरी

लोबिया चारे की फसल की बुवाई 25 से 30 सेमी. की दूरी पर पंक्तियों में हल के पीछे या सीडड्रिल से करनी चाहिए। लोबिया की एकल फसल लेने के लिए 35 से 40 किग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर उपयोग करते हुए बुवाई की जानी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

लोबिया दलहनी फसल होने से वातावरण की नाइट्रोजन से अपनी नत्रजन आवश्यकता पूर्ण कर लेती है। 20 किग्रा. नत्रजन तथा 60 किग्रा. फास्फोरस/हेक्टेयर बुवाई के समय देना चाहिए।

जल प्रबंधन

गर्मियों की फसल में 8 से 10 दिन के अंतराल पर 5–6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जबकि खरीफ मौसम में आमतौर पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन लम्बे अंतराल तक बारिश न होने की दशा में 10 से 12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

लोबिया हेतु संस्तुत खरपतवारनाशी निम्न हैं:

ट्राईफ्लूरालिन (0.75 किग्रा. सक्रिय तत्व/हे.) के बीज उगने से पूर्व के छिड़काव से खरपतवारों की वृद्धि कम होती है।

रोग एवं कीट नियंत्रण

लोबिया में पाये जाने वाले मुख्य रोग एवं उनकी रोकथाम की जानकारी इस प्रकार है।

पेंडीमेथालिन	0.75–1.0 किग्रा. सक्रिय तत्व/हेक्टेयर	बुवाई के 0–3 दिन तक	घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
इमेजाथापर	0.1 किग्रा. सक्रिय तत्व/हेक्टेयर	बुबाई के 0–3 दिन बाद या बुबाई के 20–25 दिन बाद	घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार

जड़ सड़न

रोग जनकः मैक्रोफोमिना फेजेओलीना

लक्षण

पौधे छोटे रह जाते हैं और भूमि से सटे हुए भाग में सड़न विकसित हो जाती है। बाद में जड़ें भी सड़ जाती हैं और पौधे सूख जाते हैं। परिपक्व लोबिया के पौधों में भूरे रंग के काले घाव पौधों के निचले तने और जड़ में दिखाई देते हैं, जिसमें छोटे स्क्लेरोसिया बनते हैं।

प्रबन्धन

- यूपीसी–5286, यूपीसी–607, यूपीसी–622 और यूपीसी–628 जैसी प्रतिरोधी प्रजातियों का उपयोग करें।
- ट्रायकोडर्मा विरिडी 5 ग्राम/किग्रा. बीज के साथ बीज उपचार एफ.वाई.एम. 2 टन/हेक्टेयर का उपयोग करें।
- टेबुकोनाजोल 2 डीएस 1 ग्राम/किलोग्राम बीज अथवा एन.एस.के.ई. (नीम सीड कर्नल एक्सट्रेक्ट) 50 ग्राम/किग्रा. के साथ उपचार करें।

एंथ्रेकनोस

रोग जनकः कोलिटोट्रिकम लिंडेमूटीयनम

लक्षण

काले लाल किनारे के साथ भूरे रंग के गहरे धब्बे तने, शाखा, डंठल, फली और पत्तियों पर विकसित होते हैं। पत्ती की सतह पर पीले किनारे के साथ लंबे लाल धब्बे दिखाई देते हैं। गंभीर रूप से प्रभावित फली मुड़ जाती है और इसमें सामान्य आकार के बीज बनते हैं।

प्रबन्धन

- यूपीसी–5286, यूपीसी–607, यूपीसी–622 और यूपीसी–628 जैसी प्रतिरोधी प्रजातियों का उपयोग करें।
- टेबुकोनाजोल 2 डीएस 1 ग्राम/किलोग्राम बीज अथवा एनएसकेई 50 ग्राम/किग्रा. बीज के साथ बीज उपचार के बाद 15 दिन अंतराल पर 0.1 प्रतिशत प्रोपिकोनोजोल के दो छिड़काव पत्तों पर करें।

लोबिया मोजैक रोग

रोग जनकः लोबिया मोजेक विषाणु (वायरस)

लक्षण

कई विषाणु लोबिया में बीमारी का कारण बनते हैं। ये विषाणु पत्तियों पर एक मोजेक पैटर्न (जो कि हरे और पीले रंग के धब्बों का मिश्रण होता है) उत्पन्न करते हैं। वे अकेले या दूसरों के साथ संयोजन में पाये जा सकते हैं। कुछ विषाणु मोटी और विकृत पत्तियाँ बनाते हैं। यदि यह बीमारी शुरुआती विकास चरण में पौधों पर हमला करती है, तो फली के बनने की उम्मीद बहुत कम होती है। लोबिया में सबसे आम विषाणु रोग लोबिया ऐफिड मोजेक है। यह एफिड्स (माहू) द्वारा फैलता है।

प्रबन्धन

- यूपीसी–5286, यूपीसी–607 और यूपीसी–622 जैसे प्रतिरोधी प्रजातियों का उपयोग।
- 15 दिनों के अंतराल पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिली/लीटर के दो छिड़काव चूसने वाले कीटों और पीले मोजेक विषाणु के संक्रमण को काफी कम कर सकते हैं। इसके बाद चूसने वाले कीटों के प्रबन्धन के लिए 10 दिनों के अंतराल पर वर्टिसिलियम लेकानी 5 ग्राम/लीटर के दो छिड़काव लोबिया बीज फसल में पीला मोजेक विषाणु को कम कर देता है।

कटाई एवं उपजः

खरीफ मौसम की फसल 50–60 दिन में तथा गर्मियों की फसल 70–75 दिन में कटाई (50 प्रतिशत पुष्पावस्था) करने के लिए तैयार हो जाती है। लोबिया की सामान्य फसल से 250–350 कु./हे तक हरा चारा प्राप्त हो जाता है।

प्रकाशकः
डॉ. अमरेश चन्द्रा
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
ग्वालियर रोड, निकट पहूज बाँध, झाँसी–284003 (उत्तर प्रदेश)
0510-2730666 @ icarigfri Jhansi
0510-2730833 igfri.jhansi.56
director.igfri@icar.gov.in IGFRI Youtube Channel
https://igfri.icar.gov.in Kisan Call Centre 0510-2730241

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381, 9415113108

आई.जी.एफ.आर.आई./एस.सी.एस.पी./2023/फोल्डर/09

अनुसूचित जाति उप परियोजनांतर्गत

लोबिया

संकलनकर्ताः
गौरेन्द्र गुप्ता, पुरूषोत्तम शर्मा, साधना पाण्डेय,
सुनील कुमार, अमित कुमार पाटील,
बिश्व भास्कर चौधरी, दीपक उपाध्याय,
बृजेश कुमार मेहता, राजेश कुमार सिंघल,
महेश एच.एस., मनजंगौड़ा एस.एस., मुकेश चौधरी,
अविनाश चंद्र, सचेन्द्र त्रिपाठी,
प्रतीक श्रीवास्तव एवं रोहित वर्मा

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
ग्वालियर रोड, झाँसी-284003 (उ.प्र.)